*रुचिरा भाग 2
नवमः पाठः
अहमपि विद्यालयं गमिष्यामि

मुरारी लाल शर्मा

प्रथम अन्विति

(पृष्ठ संख्या 49)

मालिनी - (प्रतिवेशिनीं प्रति)---------- क्रेतुं धनमानेष्यामि।

मालिनी - (प्रतिवेशिनीं प्रति) गिरिजे! मम पुत्रः मातुलगृहं प्रति प्रस्थितः काचिद् अन्यां कामपि महिला कार्यार्थं जानासि तर्हि प्रेषय।

(अनुवाद) - (पड़ोसिन के प्रति) हे गिरिजे! मेरा पुत्र मामा के घर गया है। किसी दूसरी महिला को काम के लिए जानती हो तो भेज दो।

गिरिजा - आम् सखि! अद्य प्रातः एव मम सहायिका स्वसुतायाः कृते कर्म्मार्थं पृच्छति स्म। श्वः प्रातः एव तया सह वार्तां करिष्यामि।
(अग्रिमदिने प्रातः काले षट्वादने एव मालिन्याः गृहघण्टिका आगन्तारं कमपि सूचयति मालिनी द्वारमुद्घाटयति पश्यति यत् गिरिजायाः सेविकया दर्शनया सह एका अष्टवर्षदेशीय, बालिका तिष्ठति।)

(अनुवाद) - हाँ सखि! आज सुबह ही मेरी सहायिका अपनी पुत्री के काम के लिए पूछ रही थी। कल सुबह ही उसके साथ बात करूँगी।
(दूसरे दिन प्रातः छः बजे ही मालिनी के घर की घण्टी किसी आने वाले की सूचना देती है मालिनी दरवाजा खोलती है देखती है कि गिरिजा की सेविका दर्शना के साथ एक आठ वर्ष की बालिका है।)

दर्शना - महोदये! भवती कार्यार्थं गिरिजामहोदयां पृच्छति स्म कृपया मम सुतायै अवसरं प्रदाय अनुगृह्णातु भवती।

(अनुवाद) हे महोदया! आप कार्य के लिए गिरिजा महेदया से पूछ रही थीं कृपया मेरी पुत्री को अवसर देकर आप अनुगृहीत कीजिए।

मालिनी - परमेषा तु अल्पवयस्का प्रतीयते। किं कार्यं करिष्यत्येषा? अयं तु अस्याः अध्ययनस्य क्रीडनस्य च कालः।

(अनुवाद) परंतु यह तो कम उम्र की प्रतीत होती है। यह क्या काम करेगी? यह तो इसके पढ़ने और खेलने का समय है।

दर्शना - एषा एकस्य गृहस्य संपूर्णं कार्यं करोति स्म। सः परिवारः अधुना विदेशं प्रति प्रस्थितः। कार्याभावे अहमेतस्यै कार्यमेवान्वेषयामि स्म येन भवत्सदृशानां कार्यं प्रचलेत् अस्मद्सदृशानां गृहसञ्चालनाय च धनस्य व्यवस्था भवेत।

(अनुवाद) यह एक घर का पूरा कार्य करती थी। वह परिवार अब विदेश चला गया है। कार्य के अभाव में मैं इसके लिए कार्य खोज रही थी जिससे आप जैसों का कार्य चले और हमारे जैसों के घर के संचालन के लिए धन की व्यवस्था हो जाय।

मालिनी - परमेतत्तु सर्वथाऽनुचितम्। किं न जानाति यत् शिक्षा तु सर्वेषां बालकानां सर्वासां बालिकानां च मौलिकः अधिकारः।

(अनुवाद) परन्तु यह तो सर्वथा अनुचित है। क्या नहीं जानती हो कि शिक्षा तो सब बालकों और सब बालिकाओं का मौलिक अधिकार है।

दर्शना - महोदये! अस्मद् सदृशानां तु मौलिकाः अधिकाराः केवलं स्वोदर-पूर्तिरेवास्ति। एतस्य व्यवस्थायै एव अहं सर्वस्मिन् दिने पञ्च-षडगृहाणां कार्यं करोमि। मम रुग्णः पतिः तु किञ्चिदपि कार्यं न करोति। अतः अहं मम पुत्री च मिलित्वा परिवारस्य भरण-पोषणं कुर्वः। अस्मिन् महार्घताकाले मूलभूतावश्यकतानां कृते एव धनं पर्याप्त न भवति तर्हि कथं विद्यालयशुल्क, गणवेषं पुस्तकान्यादीनि क्रेतुं धनमानेष्यामि।

(अनुवाद) हे महोदये! हमारे जैसों का तो मौलिक अधिकार केवल अपने पेट की पूर्ति ही है। इसकी व्यवस्था के लिए ही मैं पाँच-छः घरों का काम करती हूँ। मेरा रोगी पति तो कुछ भी कार्य नहीं करता है। इसलिए मैं और मेरी पुत्री मिलकर परिवार का भरण-पोषण करते हैं। इस बहुमूल्य समय में मूलभूत आवश्यकताओं के लिए ही धन पर्याप्त नहीं होता तो कैसे विद्यालय शुल्क, गणवेष, पुस्तक आदि खरीदने के लिए धन लाऊँगी।

शब्दार्थाः

शब्दाः	अर्थाः
मातुलगृहम्	मामा का घर
प्रेषय	भेजो
सुतायै	पुत्री के लिए
अल्पवयस्का	कम आयु वाली
उदर	पेट
तर्हि	तो
क्रेतुम्	खरीदने के लिए

पूर्णवाक्येन उत्तरत

प्रश्नम् - मालिनी स्वप्रतिवेशिनीं प्रति किं कथयति?

उत्तरम् - मालिनी स्वप्रतिवेशिनीं प्रति कथयति यत् मम पुत्रः मातुलगृहं प्रति प्रस्थितः काचिद् अन्यां कामपि महिला कार्यार्थं जानासि तर्हि प्रेषय।

धन्यवाद